कश्मीर का संक्षिप्त संघर्षमय इतिहास

शारदा ज्ञान प्रतियोगिता हेतु
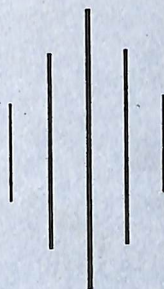
प्रकाशकः
संजीविनी शारदा केन्द्र, आनंद नगर, बोर्डी
जम्मू।

दो शब्द

यह लघु पुस्तिका छात्रों को दृष्टि में रखकर लिखी गई है ताकि छात्र तथा छात्राएं जम्मू कश्मीर विशेषकर कश्मीर के संक्षिप्त इतिहास, संस्कृति तथा भूगोल की जानकारी प्राप्त कर सकें, क्योंकि आजकल छात्रों को NCERT के अनुसार दूसरे देशों का इतिहास आदि पढने को दिया गया हैं किंतु अपने घर के भूगोल, इतिहास तथा संस्कृति आदि जानकारी से वंचित रखे गए हैं। कश्मीर के बारे में आजतक कितने ही मानक इतिहास लिखे गए हैं किंतु बडी पुस्तकों को पढने के लिए आजकल समय नहीं है। इस बात को ध्यान में रखते हुए संजीवनी शारदा केंद्र के माध्यम से इस लघु पुस्तिका का संकलन किया गया है। इस कारण केंद्र के **'विद्यार्थी इकाई'** का यह प्रयास अपने उद्देश्य में सफल होगा ऐसा हमारा विश्वास है। अस्तु।

विषय	पृष्ठ

नदियों की सीमा समुद्र हो सकती है, परन्तु पुरुषार्थ की कोई सीमा नहीं हो सकती।

-(ललितादित्य)

कश्मीर का संक्षिप्त संघर्षमय इतिहास

(सांस्कृतिक तथा राजनीतिक परिपेक्ष्य)

सतीसर - कश्मीर अनादि काल से न केवल भारतीय भू भाग का अविभाज्य अंग रहा है वरन् भारतीय आर्य संस्कृति और सभ्यता का भी प्रमुख केंद्र रहा है। भारतवर्ष के उत्तर में विशाल हिमालय की गोद में जो भूस्वर्ग कश्मीर स्थित है उसे पहले सतीदेश के नाम से जाना जाता था। यहां पहले एक विशाल झील थी, इस झील का नाम **'सतीसर'** था। इस झील के किनारे नाग जाति के लोग रहते थे। यहां पर यक्ष और पिशाच नामक अन्य दो जातियां और भी रहती थीं जो नाग जाति के लोगों को सताया करती थी। यक्ष और पिशाच जाति को संतुष्ट करने के लिए घाटी में बलि देने की प्रथा प्रारंभ हुई जिसने बाद में क्षेच़मावसी का रूप ले लिया। यहां के लोग नावों और श्रंगों में रहते थे, तथा नावों को किनारों पर बांध कर रखते थे। कमलावन की चोटी पर नाव नो'कूड नाम की चट्टान से नाव बांधने का जो निशान अभी तक विद्यमान है इसी तथ्य को दर्शाता है। भगवान शिव तथा सती इस झील में भ्रमण किया करते थे। सती (पार्वती) अपने निवास हरमुख पहाड से कौंसर नाग तक सैर किया करती थी।

इस सतीसर झील में जलोद्भव नामक दानव रहता था, जिसके अत्याचारों से त्रस्त होकर नाग जाति के लोग राजा नील की शरण में आए। राजा नील ने पिता कश्यप से सहायता मांगी। ऋषि कश्यप ब्रह्मा, विष्णु और भगवान शिव के पास गए। देवतागण समेत भगवान विष्णु ने जब जलोद्भव को चारों ओर से घेर लिया तो वह सतीसर में छिप गया। उसे जल में वास करने का वरदान मिला था। इस दानव का अंत करने के लिए वरामूला के रास्ते पहाडी को चीर

कर सतीसर झील का पानी निकाला गया और तत्पश्चात् भगवान विष्णु ने अपने सुदर्शन चक्र से जलोद्भव का अंत कर दिया।

एक मान्यता यह भी है कि नाग जाति के लोग जलोदभव की पाशविक वृति से तंग आकर पहले भगवान शिव की शरण में गए। भगवान शंकर ने उन्हें कश्यप ऋषि के पास जाने को कहा। कश्यप ऋषि ने इस झील का पानी वरामूला के रास्ते निकाल कर इसे सुखा दिया। जलोद्भव गहरे पानी में (आज के श्रीनगर के निकट) छिप गया। अंततः माता पार्वती ने शारिका (हा'र) पक्षी का रूप धरकर एक पत्थर उस स्थान पर फेंक दिया। इस भारी पत्थर के गिरते ही दानव का पानी के भीतर ही अंत हो गया। इस पत्थर ने पर्वत का रूप ले लिया और आज इस पर्वत को 'हारीपर्वत' के नाम से पूजा जाता है, यहां पर माता शारिका को शिला के रूप में पूजा जाता है। (माता शारिका ने श्रीनगर में एक परम भक्त श्री माधवजू दर की कामना पूर्ति के लिए उनके घर में श्री रूपभवानी (अल्क्षेश्वरी) के रूप में 1625 A.D. में जन्म लिया था।)

सतीसर के पानी का निकास हुआ तथा नंदन वन की भांति रमणीय घाटी प्रगट होकर खिल उठी। कश्मीर के प्राचीनतम ग्रंथ नीलमत पुराण में घाटी के निर्माण की कथा कही गई है। कश्यप ऋषि के नाम पर ही घाटी का नाम कश्यपमर पडा जो बाद में बिगडकर कश्मीर हो गया। मातृभाषा कश्मीरी में कश्मीर को क'शीर नाम से पुकारा जाता है। घाटी के निर्माण होने के बाद भारत के अन्य प्रांतों से आर्य जाति के लोग सती देश में बसने के लिए आ गए। कश्मीरी पंडितों के रूप रंग कद आदि को देखकर इन्हें आर्य जाति से जोडा जाता है।

भारती इतिहास रचयिता थामसन लिखते हैं कि आर्य ऊंचे कद, पतली

नाक, सिर कुछ लंबे तथा सुंदर गोरे शरीर वाली जाति थी जिसका सर्वाधिक रूप आजकल कश्मीर में ही मिलता है। मोनियर कश्मीरियों को विशुद्ध रूप से आर्य जाति का प्रतीक रूप मानते हैं। आईज़क टेलर का मत है कि मनुष्य जाति की जन्म भूमि स्वर्गतुल्य कश्मीर ही है। कई लोगों का मानना है कि आर्यों ने इस घाटी में वेदों का संग्रह किया था, इसलिए कश्मीर को वेदों की जननी कहा गया है। आज भी कश्मीरी भाषा में अधिक मात्रा में वैदिक शब्दों का ही प्रयोग हो रहा है। जैसे स्नुषः- न्वश अर्थात बहू, उल्खलः-व्खुल अर्थात ओखली। तंडुल-तो'मुल अर्थात चावल, माषः-महा अर्थात माश आदि।

भगवान श्री कृष्ण जी का कश्मीर आगमन

आज से लगभग पांच हज़ार वर्ष पहले कश्मीर का राजा गोनंद-प्रथम था। जरासिंध का संबंधी होने के कारण उसकी ओर से श्री कृष्ण के विरुद्ध लडता हुआ मारा गया था। उसका बेटा दामोदर भी पिता का बदला लेते हुए भगवान कृष्ण के हाथों मारा गया। कश्मीर के भावी राजा के लिए दामोदर की पत्नि यशोमती का नाम सामने आया। उस समय कश्मीर की राजनीतिक अस्थिरता को दिशा प्रदान करने के लिए भगवान श्री कृष्ण कश्मीर पधारे थे और यहां आकर उन्होंने यशोमती का राजाभिषेक किया था।

कश्मीरी पंडित विद्वानों की देन।

भारत माता के इस कश्मीर रूपी मुकुट में अनेक महापुरुष, संत रूपी मणि तथा रत्न उत्पन्न हुए, जिनकी भगवत भक्ति एवं आध्यात्मिक गूंज पूरे विश्व में सुनाई दी। कश्मीरी पंडित संगीत शास्त्रज्ञ थे तथा एक निश्चित राग में मंत्र तथा श्लोकों का उच्चारण करते थे। कश्मीर संस्कृत साहित्य का एक प्रमुख केंद्र

भी रहा है। यह कश्मीरी विद्वान ही हैं जिन्होंने भारतीय संस्कृति को समृद्ध किया है।

चौथी शताब्दी के 'विज्ञानपतिमात्रतासिद्धि' ग्रंथ के रचयिता वासुबंधु कश्मीरी थे जिन्होंने अपने ग्रंथ में बुद्ध मत पर गहन चर्चा की है।

यह सच है कि 'संगीत रत्नाकर' के रचयिता महान आचार्य शारंगदेव कश्मीरी ही थे।

ललद्यद (1335 AD.) नुन्दऋषि (1377 AD.-1444 AD). परमानंद (1794-1879 AD.), अलंकार शास्त्रज्ञ श्री वाग्भट्ट , श्री म्यर्ज़ काकजी, श्री कृष्णजू राज़दान(1850-1926 AD.) सतरहवीं शताब्दी के पीर पंडित पादशाह तथा स्वामी गोविंद कौल वनपूह (1882-1973 AD.) आदि कितने ही शक्तिशाली महापुरुष इसी भूमि में उत्पन्न हुए हैं। अरिनिमाल, श्रीभट्ट तथा अन्य कई महान आत्माओं ने भी समाज को संभालने में अपना योगदान दिया है।

चौदहवीं शताब्दी के मध्य में संत कवयित्री ललेश्वरी (ललद्यद) ने जनसमुदाय को अपने धर्म पर अडिग रहने तथा बलात मतांतरण की घटनाओं से अपने को बचाए रखने की सीख दी। उन दिनों मुस्लिम शासकों ने कश्मीर की सत्ता पर कब्ज़ा कर हिंदुमय कश्मीर को मुस्लिम कश्मीर बनाने के षड्यंत्र की शरुआत की थी। ललद्यद ने जन मानस का मनोबल बढ़ाने के लिए कहा:

"हा ़च्यता कव् छुय लो'गमुत परमस, कव गोय अपज़िस पज़्युक ब्रोंथ।

वे'शि बो'ज़ वश को'रनख पर धर्मस, यिन् गछ़न् ज़ेन् मरन् क्रोंत। "

अर्थात, हे मन, तू दूसरे के धर्म को, विषय वासना की तृप्ति के लिए, क्यों अपना

रहा है। आप झूठ बात को कैसे सच मान कर आवागमन के चक्र में पड रहे हो।

यही चेतावनी श्रीूमदभगवद्गीता में भी दी गई है कि दूसरे के अच्छे धर्म को अपनाने से अपने ही धर्म में मरना श्रेष्ठ है।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

स्वभावनियतं कर्म कुर्वन्नाप्नोति किल्बिषम। गीताजी (18-47)

अर्थात अच्छी प्रकार आचरण किए हुए दूसरे के धर्म से गुण रहित भी अपना धर्म अति उत्तम है क्योंकि स्वभाव से नियत किए हुए स्वधर्म रूप कर्म को करता हुआ मनुष्य पाप को नहीं प्राप्त होता।।

श्रेयान्स्वधर्मो विगुणः परधर्मात्स्वनुष्ठितात्।

स्वधर्मे निधनं श्रेयः परधर्मो भयावहः। गीताजी (3-35)

अर्थात अच्छी प्रकार आचरण किए हुए दूसरे के धर्म से, गुण रहित भी अपना धर्म अति उत्तम है। अपने धर्म में मरना भी कल्याण कारक है और दूसरे का धर्म भय को देने वाला है।

आपतकाल में भी कश्मीर के अनेक संतोंने अपनी धर्म परायणता तथा भगवत भक्ति की परिपाटी को जीवित रखा। कुछ एक ने काव्य द्वारा अपने गहन अनुभवों की अभिव्यक्ति की। इन गीतोंमें तात्कालिक- सामाजिक, राजनीतिक तथा आर्थिक परिस्थितियों का भी वर्णन किया गया है, जिनमें स्वामी म्यर्ज़काक जी (1744 AD.-1830 AD.) परमानंदजी (1791-1879 AD.) तथा पंडित कृष्णजू राज़दान (1850-1926 AD.) आदि के गीतों से स्पष्ट है। श्री म्यर्ज़काक के पास जाकर लोगों ने अत्याचार तथा क्रूरता को समाप्त करने की

दुहाई दी तो उन्होंने पठान शासन का अत्याचार समाप्त होने के बारे में भविष्यवाणी की थी कि अब जल्दी यह ज़ालिम शासन सिखों के आने से समाप्त होगा। इन ज़ालिमों की बर्बरता का वे स्वयं शिकार हुए थे। लोगों की विनती का उत्तर उन्होंने इस वाख में दिया जो वाखपोथी में इस प्रकार लिखित है।

नरसिंह भगवान शब्द त नाराण, शब्द्य द्राव वाख गव वाख गुरु।
गुरु नानक पंथ वाक् गुरु, सिख अवतार छुय सूत्य सूत्य।
गुरु गोविंद दो'नवय कुनुय, ओम गुरुवे शब्द गोविंदय।
गुरु गोविंद, सेंत यक जाई, वाक गुरु छुय सूत्य सूत्य।

परमानंद जी रचित भजन 'त्राहि माम त्राहे' गीत के 'अट्बारि हे'थ कठ कह वात् घाट' से उस दौर की शासन पद्धति का साफ ज्ञान हो जाता है। कहा जाता है कि खन्नाबल में नाव में ठहरे सूबेदार ने काफ़र परमानंद जी को आदेश भेजा कि वह अपने कंधे पर एक भेडू उठाकर मट्टन से खन्नाबल तक लाए कुछ अफ़गान सिपाही इस के साथ थे तो अपनी मनोव्यथा को श्री कृष्ण मुरारी के सामने नीचे दिए पदों में इस प्रकार वर्णन किया।-

त्राहि माम त्राहे पाहे मुरारी, कटु संकट ही मुकट दा'री।
तावनि बाज़ार् म्वखतस लो'गमा वट्, यावुन पो'खत्कार सोदा खाम,
यावुन याम मे' सोरि बुजरस कति वट्। कटु। आदि।

श्री कृष्णजू राज़दान प्रभु से अनुग्रह की याचना करते हुए तत्कालीन जनता की आर्थिक परिस्थितियों अथवा निर्धनता का संकेत देते है। उदाहरण प्रस्तुत हैं।

क्याह करव अ'स्य न्यचिव कोरि वा'ली ब'डि नावदार खा'ली दस्त।

द्यन छु गुज़रान कमि कशालो श्याम लालो गाश हा आव। (कुलयाति कृष्णजू राज़दान)

अर्थात हे कृष्ण! हमारा कुटुंब बडा है किंतु आधा खर्चा भी पूरा नहीं होता। हमारी नादारी को तो देखिए।

इतिहासकार श्री लक्ष्मीदर कल्ला का तर्कसंगत मत यह है "इतिहास की उषा में आर्यों ने इसी कश्मीर घाटी में वेदों का संकलन और संग्रह किया है। उपनिषद्कालीन युग में वीतरागी ऋषियों को इस कश्मीर घाटी की नैसर्गिक सुन्दरता ने भावमुग्ध किया था- (रूपभवानी रहस्योपदेश पश्ष्ट 10-1977)

बौद्धमत का प्रचार :

बौद्धकालीन भारत में भी कश्मीर का एक विशिष्ठ स्थान रहा है। महाराजा अशोक के समय में कश्मीर के ब्रह्मण बौद्ध सिद्धांतों का प्रचार एवं प्रसार करने के लिए चीन मंचूरिया और मंगोलिया आदि देशों को गए थे। तिब्बत को उन्होंने अपना प्रमुख केन्द्र ही बना लिया था। शायद इसीलिए कहा जाता है कि कश्मीर की शारदा लिपि ने ही तिब्बत की लिपि को जन्म दिया है। कश्मीर स्वयं शाक्त प्रधान देश होने के नाते उसने बौद्धमत को भी प्रभावित किया। श्रीनगर के पास पांद्रेंठन में बौद्धों की दो प्रमुख सभाओं का श्रेय कश्मीर के इतिहास को मिला है। पहली सभा अशोक के समय में सम्पन्न हुई। कनिष्क के कालखंड में बौद्धों की महासभा हा'रवन में सम्पन्न हुई। हा'रवन में सभा के सिद्धांतों को ताम्र पत्रों पर खुदवा कर धरती के अंदर गाढ़ दिया गया था। बौद्धमत का विभाजन हीनयान और महायान के रूप में कश्मीर में ही हुआ है।

शैव दर्शनः

बौद्धों के ह्रास के पश्चात शैव दर्शन जनता के सामने उद्घाटित हुआ। वैदिक मंत्र 'ब्रह्म सत्यम जगत मिथ्या' के स्थान पर दोनों को सत्य मान कर सर्वत्र शिव ही लीला कर रहे हैं ऐसा तर्क देकर सकारात्मक सोच प्रस्तुत की गई। कश्मीर शैवदर्शन के विचार से साधकों की कई उलझी हुई गुथियां सुलझ गईं। शैवदर्शन ने उदासीनता के स्थान पर सह-अस्तित्व के वातावरण में जीवन के मूल्य को आंका और खोज के नए दरवाज़े खोल दिए।

यहां के **स्पंदवाद** ने समस्त ब्रह्मांड की चेतना को एक स्पन्द मानकर सामने रखा। इसी भूमि में शैवदशर्न के आचार्य एवं 'स्पंदकारिका' के रचयिता वसुगुप्त, (आठवीं शताब्दी) 'प्रत्यभिज्ञा शास्त्र' के रचयिता उत्पलदेव, 'तंत्रालोक', 'परमार्थसार' तथा 'प्रत्यभिज्ञाविमर्षिणि' आदि पुस्तकों के रचयिता आचार्य अभिनवगुप्त (993-1070 AD.), उत्पन्न हुए जिन्होंने रस शास्त्र में रस की बृहद व्याख्या तथा भरतमुनि के नाट्य शास्त्र पर भाष्य लिखे। भट्ट कल्लट, भास्कराचार्य, साहिब कौल, आठवीं शताब्दी ई० भाष्यकार रचियता तथा 'शिवसूत्रविमर्षिणि' के रचयिता क्षेमेन्द्र तथा अन्तिम आचार्य श्रीराम उत्पन्न हुए हैं। शैव परंपरा के विश्व विख्यात महान शैवाचार्य श्री लक्षमण जू तथा अपनी खोज के आधार पर डाक्टर बलजीनाथ पंडित ने शैव सूत्रों की संस्कृत, अंग्रेज़ी आदि भाषाओं में टिपणि देकर कठिन गुथियों को सुलझा कर संसार के सामने प्रस्तुत किया। पश्चिमी शोधकर्ताओं की कश्मीर में आकर अपनी जिज्ञासाएं शांत होती रहीं। इन में महर्षि महेश योगी के शिष्य जॉन और डिनाइस को कश्मीर शिवदर्शन को जानने का सौभाग्य स्वामी लक्षमण जी से ही प्राप्त हुआ। विश्वविख्यात मनोवैज्ञानिकशास्त्र विशेषज्ञ स्विटज़रलैंड के डॉक्टर एम डी बॉस की अध्यात्मिक पिपासा वनपोह

कश्मीर में शांत हुई, और भी अनेक प्रकार की मूल्यवान रचनाओं का जन्म समय-समय पर होता रहा।

यहां के संत भी अद्वतीय हैं तथा सर्वत्र वंदनीय हैं। एक पारंपरिक कथा के अनुसार पांडवों के राजसूय यज्ञ सम्पन्न करने के लिए भगवान श्रीकृष्णजी के कहने पर कश्मीर से कैगाम निवासी कैवभट्ट को विशेष रूप से हस्तिनापुर (दिल्ली) आमंत्रित किया गया था। जगतगुरु शंकराचार्य, स्वामी विवेकानंद आदि महान आचार्यों ने कश्मीर के महान तीर्थों का भ्रमण किया तथा अपने को पूर्णता को पहुंचा हुआ मान लिया। संसार के कितने ही महापुरुष यहां के संतों के अनुभवों से लाभान्वित हुए हैं। 'साहित्य' शब्द का जन्म भी आठवीं शताब्दी में क़ाश्मीर निवासी कंटुक द्वारा ही हुआ था। कैयट ने पाणिनी के प्रायः लुप्त होते संस्कृत व्याकरण को पुनः जीवित किया। जयशंकर प्रसाद की कामायणी की बुनियाद, जगधरभट्ट (1350 AD.) की 'कुसमान्जली' ही है।

कर्मकांड पद्धतियां :-जहां भारत में तीन प्रदेशों दक्षण, उत्तर, मध्य के लिए तीन कर्मकांड पद्धतियां नियुक्त की गई हैं वहां कश्मीर के छोटे से प्रदेश के लिए ऋषि लौगाक्ष का बनाया कर्मकांड प्रचलित है। यह कर्मकांड आसुरी प्रकोप के कारण प्रायः लुप्त हो चुका था, पर इसे श्री केशव भट्ट ने पुनः संकलित करके मुद्रित करवा दिया। कश्मीरी पंडितों के लिए (ह्यंज़े वनवुन 'हियमाल' के अनुसार) 24 संस्कार {1.गर्भादान 2-सीमांतोन्नयनः-3.पनसुवनः-4.लठ मोक्लावुन-5. त्रुय- 6.श्रान स्वंदर 7.नामकरणः 8.जातकर्म या काहनेथ्रूः-9-सूर्यदर्शन10. मास नेथ्रूर 11.शिशुर 13.निष्क्रमणः-14.दंतदावन 15. अनुप्राषणः. 16. ज़रकासय-17. पहला वोहरवोद.(जन्मदिन) 18. कर्णभेदन 19. उपनयन तथा वेदारम्भ 20. समावर्तनः 21 विवाह 22-गश्हस्थ, 23- वानप्रस्थ, 24

अन्त्येष्टि} का विधान है जब कि शेष भारत के लिए केवल सौलह संस्कार ही हैं।

कश्मीर का राजनीतिक इतिहास तथा संघर्ष-

कश्मीर में इतिहास लिखने की परंपराः कश्मीर में पहले से ही इतिहास लिखने की परंपरा रहीं है 12वीं शताब्दी'(1148 से 1150 A.D.) में कल्हण पंडित द्वारा संस्कृत भाषा में रचा कश्मीर का इतिहास 'राजतरंगिणी' एक प्रमाणिक विश्व प्रसिद्ध तथा भारतवर्ष का प्रथम मानक इतिहास है, जो पांच हज़ार वर्ष पूर्व से आरंभ होता दिखाया गया है। इसके अतिरिक्त नीलमुनि का 'नीलमत पुराण', क्षेमेन्द्र की 'नृपावली' जोनराज की 'जोनराज़ तरंगिणी' श्रीवर, शुक तथा अन्य स्थानीय लोगों का लिखा कश्मीर का इतिहास प्रसिद्धि पा चुका है। कश्मीर ने हीं भारत में प्रामाणिक इतिहास लिखने की परंपरा दी है जो अभी तक अबाध गति से आगे चल रही है। राजतरंगिणि पर एम ए स्टेन ने (M. A. Stien comentary on Rajtarangini,) कश्मीर पर शोधपरक इतिहास लिखा। सर विलियम लारेंस ने कश्मीर का गहन अध्ययन करके कश्मीर का मानक इतिहास 'द वेली आफ़ कश्मीर' लिखा है तथा जम्मू कश्मीर के पूर्व राज्यपाल, श्री जगमोहन ने 'माई फ्रोज़न टर्बुलेनस इन कश्मीर' नामक पुस्तक को सामने लाया। इतिहासकार हसन, श्री काशीनाथ पंडित तथा पंडित आनंद कौल बामज़ेई {1861-1941 A.D.} के अतिरिक्त कई अन्य लेखकों ने भी कश्मीर के बारे में अपना चिंतन दिया। इतिहास लिखने की कश्मीर की परंपरा अभी भी जारी है।

कश्मीर के राजों की वंश परंपरा राजतरंगिणी से मिलती है। महाराजा अशोक ने कलिंग लडाई के पश्चात बौद्धमत अपना लिया। समस्त भारत में बौद्धमत का प्रचलन था और कश्मीर में भी इसका वर्चस्व बढा, पर 638 AD

में इस मत के बाद पुनः शैवदर्शन ने अपनी पैठ जमाई। अशोक ने 250 BC कश्मीर में एक शहर श्रीनगरी बसाया जिस को आज श्रीनगर कहते हैं। उसने तीन बौद्ध विहार निर्माण किए जिनमें पहला भट्टार्क विहार (वर्तमान बटवोर) दूसरा स्वर्ण विहार (वर्तमान स्वनवोर) तीसरा भिक्षु विहार (वर्तमान बुछ्वोर) कनिष्क 160BC से 129BC तक कश्मीर के बौद्ध राजा थे जिस ने महायान की चौथी बैठक बुलाई थी। बौद्ध राजा कनिष्क ने कनिष्कपुर बसाया जिस को आज कनिसपुर (बारामुला में) कहा जाता है। 515 ई० में मेहरकुल कश्मीर के राजा बने। मेहरकुल ने पहलगांव में मिहिरेश्वर मंदिर वर्तमान मामलेश्वर मंदिर की स्थापना की।

राजा अवंतीवर्मन ने अवंतीपुर में दो भव्य मंदिर अवंतीश्वर तथा अवंतीस्वामी का निर्माण कराया था जो कि अब खंडित रूप में मौजूद हैं।

711-719 AD. के आसपास **राजाचंद्रापीड** (कारकोट वंश) के बारे में चीन के एक राजवंश 'ता-आंग' के सरकारी उल्लेखों में इस राजा की महत्ता को स्वीकार किया है। आठवीं शताब्दी में **ललितातदित्य** {724 - 761 AD.} ने कश्मीर का राज्य संभाला। उसकी राजधानी परिहासपुर थी। ललितादित्य ने ललितपुर बसाया था जो आज लेतपुर के नाम से जाना जाता है। ललितादित्य की सेना आसाम तथा श्रीलंका, मंगोलिया, गांधार, दर्ददेश (दरदिस्तान), मध्य एशिया, एवं तिब्बत तक पहुंची थी। इन्होंने ही मार्तण्ड का सूर्य मंदिर बनवाया था। यह मंदिर इतना विशाल था कि यहां से परिहासपुर तथा अनंतनाग का दृश्य दिखाई देता था। इस मंदिर को सिकंदर बुतशिकन ने तोडा था। ललितपुर {आधुनिक ले'तपोर} इन्हीं का बसाया हुआ कस्बा था। मुहमद गज़नवी (999-1030 A D.) ने 11 वीं शताब्दी में दो बार कश्मीर को जीतना चाहा किंतु **संग्रामराज**

(1003 - 1028 ई०) ने उसे बुरी तरह पछाड कर परास्त किया तथा दुबारा कश्मीर का रुख नहीं किया।

सहदेव के शासन काल 1301 से 1320 AD. में कुछ विदेशी कश्मीर में शरण लेने के लिए घुसे। जिन में स्वात से आया हुआ शहमीर (1313 AD.), तुर्किस्तान से आया हुआ बुलबुल शाह तथा तिब्बत का भगोडा युवराज रिंचन का नाम उल्लेखनीय है। रिंचन को अपने चाचा ने लडाई में हराकर वहां से भगाया था। चौथा व्यक्ति लंकरचक जो दर्दिस्तान का राजा था अपने शत्रुओं से हार कर अपने प्राण लेकर कश्मीर में शरण लेने आया था। इन को कश्मीर के राजा सहदेव ने न केवल शरण दी बल्कि अनेक सुविधाएं भी दीं। जिन में शहमीर जो दरवेश बनकर रहने लगा था। उस के जीविका चलाने के लिए एक पूरा गांव दे दिया। रिंचन शाह को अपने कई साथियों के साथ सहदेव के सेना प्रमुख रामचंद्र ने सेना में नौकरी दे दी।

1320 AD. में जुलकदिर खां उपाख्य डुलचू जो कंधहार का फौजी कमांडर था, ने साठ हज़ार सेना लेकर कश्मीर पर आक्रमण किया और बलपूर्वक लोगों को मुसलमान बनाने लगा। आठ मास तक यह ज़ालिम लूटमार करता रहा। अंत में कश्मीर छोड कर दिवसर के रास्ते हज़ारों कश्मीरी ब्रह्मण गुलाम बनाकर ले गया, पर रास्ते में ज़बरदस्त बर्फ के तूफान में घिर कर डलचू सारी सेना व दासों समेत मर गया। डुलचू के आक्रमण के बाद राजा सहदेव का सेनापति रामचंद्र ने कश्मीर राज्य की बागडोर संभाली। रिंचन तथा शहमीर ने सुनियोजित ढंग से रामचंद्र के शासन में उच्च जगह पाली। कुछ समय के बाद इन दोनों ने अपने मालिक के साथ विश्वासघात करके रामचंद्र को रात के समय नींद में ही कत्ल कर दिया।

इसी समय से कश्मीर के इतिहास ने करवट ले ली। रिंचन ने कश्मीर राज्य पर कब्ज़ा जमाकर रामचंद की बेटी कुटारानी से विवाह किया। सहदेव ने पुनः राज्य वापस लेने के लिए प्रयत्न किया था किंतु हार गया। शहमीर ने बुलबुल शाह (जो कलंदर बनकर रह रहा था) से मिलकर षड्यंत्र रचा तथा रेंचन को मुसलमान बनाया अपितु कुटा रानी ने अपना धर्म नहीं बदला। रिंचन की 1323 A.D. में मृत्यु हो गई। कुटारानी ने सहदेव के भाई उड्यन को निष्कासन से बुलाकर सिंहासन पर बिठाया तथा उससे विवाह करने के बाद शासन की बागडोर अपने हाथ में लेली। 1338 A.D. में उद्दयन देव की मृत्यु हो गई। कुटा रानी ने उसके बाद चंद मास तक ही राज्य संभाले रखा।

1339 ईस्वी में कश्मीर की अंतिम हिंदू साम्राज्ञी **कोटारानी** के बलिदान के बाद प्रथम मुस्लिम शासक शहमीर ने बडी कुटिलता से कश्मीर पर कब्ज़ा जमाया। उड्यन देव की मृत्यु के बाद शाहमीर किसी भी तरह से शासन को हथियाना चाहता था, साथ ही उस की नज़र कूटारानी पर भी थी। कूटारानी इस विदेशी मुस्लिम के हाथों में आने से पहले ही अपनी जीवन लीला समाप्त कर दी। शाहमीर कश्मीर के पहले मुस्लिम शासक बने और सुलतान शहाबुद्दीन के नाम से शासन किया। उनके परिवार ने दो सौ वर्षों तक कश्मीर पर राज्य किया।

सिकंदर बुतशिकन ने (1389 A.D. से 1413 A.D.) तक कश्मीर को अपने कब्ज़े में रखा। इस अवधि में हिंदुओं की संस्कृति को नष्ट भ्रष्ट किया गया। सर्वाधिक मंदिर तोडे गये तथा बहुमूल्य व दुर्लभ वाङ्मय को जलाया गया। बलात् मतांतरण की घटनाएं चरम पर थीं। हिंदू अपने प्राण बचाकर भागे जा रहे थे। आज भी यह कहावत प्रचलित है कि तब कश्मीर में केवल ग्यारह घर ही शेष बचे थे, शेष तो मारे गये थे या फिर मुसलमान बनाए गये थे। फिर

सुलतान ज़ैन-उलआबदीन ने कश्मीर का शासन संभाला।

कश्मीर का शासक ज़ैन-उल आबदीन (1420 से 1470 A D.) घातक फोडे से पीडित था। उस के इस असाध्य रोग को कोई

नीम हकीम ठीक नहीं कर पाया । अंततः गुफाओं के कंदराओं में छिपे वैद्य शिरोमणि की खोज कर उसे राजा की जानलेवा बीमारी के बारे में कहा गया। कश्मीरी पंडित श्रीभट्ट ने अपनी कुशलता से राजा का सफल उपचार किया। ज़ैन-उल आबउदीन श्रीभट्ट की चिकितसा से प्रभावित हुए तथा उन्हें मुंह मांगा इनाम देने को उत्सुक हुए, पर निस्वार्थी **श्रीभट्ट** ने अपने लिए कुछ नहीं मांगकर अपने समुदाय के हित के लिए मांगा, श्रीभट्ट के कहने पर निष्कासित किए हुए हिंदुओं की घर वापसी संभव हो सकी, इस जाति पर ज़ज़िया मुआफ किया गया, धार्मिक अनुष्ठानों के आयोजनों के लिए अनुमति दी गई। मतांतरण की प्रक्रिया रुक गई। श्रीनगर नवशहरा के पास श्रीभट्ट के नाम पर एक मुहल्ले का नाम श्रीभट्ट मुहल्ला है।

ज़ैन-उल आबउदीन राजा की मृत्यु के बाद कश्मीर में इस्लाम का दमनचक्र फिर से चला। किंतु कश्मीरी महान पुरुषों ने मतांतरण के विरुध्द भरपूर संघर्ष जारी रखा। इन में एक महापुरुष श्रीमान **निर्मलकण्ठ** नाम आता है जिसने मुसलमान बने हुए हिंदुओं को पुनः हिंदू धर्म में वापस लाया। इस पर नाराज़ होकर चक्क शासकों (1555- 1586 ई०) ने उसे फांसी पर लटकाया। (श्री श्रुक पंडित राजतरंगिणी श्लोक 155)।

अकबर के समय 1586 A D. में कश्मीर मुगल साम्राज्य (1586- 1753 ई०) के आधीन लाया गया।

17वीं शताब्दी के मध्य अवरंगज़ेब के शासन में अत्याचारों से ग्रस्त कश्मीर के लोगों ने **माता अलखेश्वरी** की शरण ली। माता अलखेश्वरी {जिसके मायके का नाम रूपा था तथा बाद में र्‌वपभवानी के नाम से प्रसिद्ध हुई} के अनुरोध पर **पंडित कृपाराम दत्त** निवासी मार्तण्ड के नेतृत्व में पांच सौ कश्मीरी ब्राह्मण 25 मई 1675 ई० को गुरु तेगबहादुर महाराज के पास फरियाद लेकर गये कि इस घोर संकट में हिंदू जाति को आतताई मुस्लमान शासकों से बचाया जाये। गुरु तेग बहादुर ने 27 नवंबर, 1675 ई० को अपना बलिदान देकर हिंदु जाति की रक्षा की।

1752 ई० में पठान सूबेदार अबदुल्लाह खां इश्क अबासी ने कश्मीर में कठोरता की हदें पार कीं तथा हिंदू व्यापारियों से एक करोड रुपए बटोर कर कश्मीर का शासन अबदुलाखां काबूली को सोंप कर वापस काबुल चला गया। इस पठान शासक को **सुखजीवनमल** ने मार कर स्वयं कश्मीर का राज्य संभाला। इस प्रकार कश्मीर में कुछ समय के लिए फिर से हिंदू राज्य की स्थापना हुई। इस दौरान कश्मीरी लोगों ने राहत की सांस ली और सुखजीवनमल ने लोगों के लिए अत्यंत लाभदायक कार्यक्रम दिए जिससे लोगों को अत्यंत राहत मिली इसी लिए आज भी लोग राहत के काम को याद करके कहते हैं कि 'कुजा वखते स्वखजूव' अर्थात कहां वह सुखजू का समय पुनः आएगा। 1753 A D. में पठान शासक अहमद शाह अबदाली ने कश्मीर को काबुल के शासन में लाया और वहां से ही इस पर निगरानी रखी। कश्मीर पर अत्याचार की दास्तान का अभी अंत नहीं हुआ। जबार खां (1819 A D.) के बारे में अभी भी कहावत है कि **'वुछतोन यि जबार जन्दु, हारस ति को'रुन वन्द्र'**। जबार खां ने शिवरात्री को फागन के बदले में आषाढ मास में मनाने का आदेश दिया था। तो

आषाढ में शिवरात्रि की रात को भयंकर हिमपात हुआ था। इस कारण कश्मीर में भयंकर अकाल पडा था।

कश्मीर में लगभग पांच सौ वर्षों से हिंदू निरंतर बर्बर विदेशी शासकों के अत्याचारों से त्रस्त था। 1819 A D. में अफगान शासकों के अत्याचारों से मुक्ति के लिए घाटी के हिंदुओं ने बीडा उठाया। इस मुक्ति आन्दोलन के सूत्रधार बने **पंडित बीरबल दर। वह अपने पुत्र राजकाक दर** के साथ सिख शासक महाराजा रणजीतसिंह के लाहौर दरबार में सहायता की गुहार करने गए। महाराजा रणजीत सिंह ने अपने पांच श्रेष्ठ सेनापतियों के साथ तीस हज़ार सशस्त्र सैनिक पंडित बीरबल दर के मार्गदर्शन में कश्मीर की ओर रवाना किए। 20 जून 1819 A D. को बीरबल दर ने एक विजयी के रूप में श्रीनगर में प्रवेश किया। तत्कालिन शासक आज़िम खां तो अपने भाई जब्बार खां को राज्य सोंप कर भाग गया था। इधर पंडित बीरबल दर को अपनी पत्नि और बहू का बलिदान देना पडा था जिन्हें वह अपने विश्वस्त कादिर खां गोजवारी को सौंप कर गए थे। इस प्रकार कश्मीर में न केवल अफगानियों के शासन का अंत हुआ बल्कि सिख शासन के प्रारंभ होते ही इस्लाम का दमन चक्र समाप्त हो गया।

सिख शासन : सिख शासन के बाद 1846 A D. में महाराजा गुलाब सिंह ने जम्मू कश्मीर राज्य की स्थापना की। इस से पूर्व 16 मार्च 1846 ई० को अंग्रेज़ों के साथ हुई संधि में ब्रिटिश सरकार ने जम्मू कश्मीर पर गुलाब सिंह के अधिकार को स्वीकारा, अमृतसर संधि के समय ब्रिटिश सरकार ने गुलाब सिंह से 75 लाख रुपए लिए थे। महाराजा गुलाब सिंह के दरबार में जनरल ज़ोरावर सिंह नाम के ऐसे योद्धा हुए जिन्हों ने राज्य की सीमा लद्दाख और तिब्बत तक बढाई। 1856 A D में महाराजा गुलाब सिंह के पुत्र रणवीरसिंह,

1885 AD में उन के पुत्र प्रतापसिंह जम्मू कश्मीर के राजा बने। महाराजा रणवीरसिंह ने हुंज़ा, स्कर्दू तथा नागर राज्यों को अपने साथ मिलाया। रणवीर सिंह एक कुशल प्रशासक और साहित्य एवं कला के प्रेमी थे। उन के नाम से आज भी रणवीर पीनल कोड की कई धाराएं न्यायालयों में प्रयोग में लाई जाती है। महाराजा प्रतापसिंह ने सडक मार्ग द्वारा कश्मीर को भारत के साथ जोड दिया तथा महोरा का बिजलीघर निर्मित करवाया। हरिसिंह डोगरा वंश के अंतिम राजा बने, जिन्हों ने **1947 AD** तक राज्य किया।

15 अगस्त **1947 AD,** के दिन भारत स्वतंत्र हुआ। तत्पश्चात भारत के संघीय ढांचे में जम्मू कश्मीर लद्दाख के संपूर्ण विलय में महाराजा हरिसिंह की भूमिका सक्रिय रही।

पंडित जवाहर लाल नेहरू को भारत का पहला प्रधान मंत्री बनाया गया। इस बीच पाकिस्तान ने कश्मीर पर धावा बोल दिया। बडी शीघ्रता से **26-** अक्टूबर **1947AD** को महाराजा हरिसिंह ने विलय संधि प्रस्ताव पर हस्ताक्षर किए तथा इस के साथ ही भारतीय सेना श्रीनगर में पहुंची तथा आक्रमणकारियों को पीछे खदेडने में अपनी भूमिका निभाई। जब संघर्ष विराम की घोषणा हुई तब तक राज्य के आधे से भी अधिक भू-भाग पर पाकिस्तानी सैनिकों ने कब्ज़ा कर लिया था। शेख अब्दुल्ला राज्य के पहले मुख्या बनाए गए। तब मुख्य मंत्री का पद प्रधान मंत्री के नाम से जाना जाता था। जम्मू कश्मीर राज्य को धारा 370 के तहत विशेष दर्जा दिया गया जिस के अंतर्गत उसे अपना संविधान, ध्वज तथा वज़ीरअज़म तथा सदरे रियासत जैसे पद नाम रखने की छूट मिल गई। इस राज्य में प्रवेश के लिए तब प्रवेशपत्र प्राप्त करना होता था।

'एक देश में दो विधान, दो प्रधान, दो निशान नहीं चलेगें' का नारा बुलंद करते

हुए प्रजा परिषद ने जम्मू में ज़ोरदार आंदोलन चलाया था। जिस के समर्थन में जनसंघ के संस्थापक अध्यक्ष तथा सांसद डॉक्टर श्यामा प्रसाद मुखर्जी परमिट सिस्टम का उल्लंघन करते हुए जम्मू कश्मीर की सीमा में दाखिल हुए थे। उन्हें लक्षनपुर में गिरफ्तार किया गया था। बाद में श्रीनगर में संदिग्ध परिस्थितियों में उनकी मृत्यु होगई।

स्वतंत्रता प्राप्ति के **62** वर्ष बाद जब हम जम्मू कश्मीर के इतिहास पर नज़र दौडाते हैं, तो हमें कश्मीरी पंडितों के अधिकारों के हनन्, उनके जातीय नरसंहार की बर्बतापूर्ण घटनाओं की महागाथाएं सामने आती हैं। इस से पूर्व भी यदि **1931 AD** की घटना का स्मरण किया जाए कि किस प्रकार घाटी के बहुसंख्यक मुस्लमान वर्ग ने डोगरा शासन के विरुद्ध आवाज़ उठाई थी और उस की मार कश्मीरी पंडितों को झेलनी पडी। किस प्रकार शेख अब्दुल्लाह ने राजनीतिक सत्ता का दुर्पयोग कर भूमि सुधार की आड में घाटी के ज़मीनदार कश्मीरी पंडितों से ज़मीनें छीन कर अपने समुदाय के लोगों में बांट दीं। रही सही कसर सय्यद मीर कासिम ने पूरी करदी।

कश्मीरी पंडित समुदाय ने घाटी में बेरोज़गारी की पीडा झेली, प्रशासनिक स्तर पर भेदभाव को भी झेला पर हार नहीं मानी। अंततः **1989** के अंत और **90** के आरंभ में आतंकवाद की ऐसी आंधी आई कि इस समुदाय को बंदूक की नोक पर अपने घरों से बलपूर्वक खदेडा गया। आज करीब चार लाख विस्थापित समाज अपने ही देश में शरणार्थी बना हुआ है तथा अपने अस्तित्व की लडाई स्वयं लडते हुए आज भी वह अपनी जडों के करीब पहुंचने की उत्कंठा लिए हुए है। घर वापसी की ललक वह आज भी संजोये हुए है।

भारत की भूगोलिक स्थिति

भारत एक विशाल देश है। अफगानिस्तान, नेपाल, भूटान, तिब्बत, ब्रह्म देश, श्री लंका, पाकिस्तान, पहले महान भारत के ही भाग थे। भारत के उतर में हिमालय पर्वत है जो **2600** किलोमीटर लंबा तथा **200** से **400** किलोमीटर तक चौडा है। इसमें से पंजाब की पांच नदियां- रावी, चिनाब, बयास, सतलुज, वितस्ता (जहलम), अरब की खाडी में समुद्र के साथ समा जाते हैं। पूर्वी भाग से गागरा, गंडक, गोमती, कोसी, सोन, गंगा यमुना हिमालय से ही निकली नदियां हैं, तथा तिब्बत की ओर से ब्रह्मपुत्र मानसरोवर से निकल कर गंगा तथा यमुना के साथ मिलकर बंगाल की खाडी में समुद्र के साथ मिल जाते हैं। दक्षिण में नर्मदा तापती गोदावरी, कृष्णा कावेरी आदि नदियां हैं। भारत के उतर में चीन दक्षिण में श्रीलंका तथा हिंद महासागर पूर्व में बंगला देश तथा मयनामार तथा पश्चिम में पाकिस्तान देश हैं। भारत का कुल क्षेत्र फल **84** लाख वर्ग मील है। इस पूरे भू-भाग को व्यवस्था की दृष्टि से **28** प्रदेशों में तथा **7** केंद्र शासित प्रदेशों में बांटा गया है। भारत तीन ओर से समुद्र से घिरा हुआ है। भारत का साहिल **8000** किलो मीटर के आसपास है। भारत के **28** प्रदेशों में से जम्मू कश्मीर एक प्रदेश है जिस की विस्तार से चर्चा बाद में करेंगे, (किंतु पहले हम भारत के हिंदू साहित्य दर्शन तथा जीवन पद्धति की संक्षिप्त चर्चा करेंगे।)

हिन्दू जावन पद्धति

आर्य अथवा हिंदु धर्म को सनातन धर्म कहते हैं अर्थात सदा रहने वाला। आर्य धर्म का अर्थ है सुसंस्कृत मानव धर्म। अब इसी को हिंदूधर्म भी कहा जाता है। हिंदू शब्द सिंधु से बना है।

भारतके प्राचीन धार्मिक साहित्य दर्शन में चार वेद अठारह पुराण, छः शास्त्र, आठ प्रमुख उपनिषद्, चार आश्रम, चार पदार्थ सम्मिलित हैं।

चार वेद= **1**- ऋग्वेद-दृष्टाः-अग्निऋषि। **2**- सामवेद-दृष्टाः-आदित्य ऋषि। **3** यजुर्वेद- दृष्टाः-रघु ऋषि। **4**- अथर्ववेद-दृष्टाः-अंगिरा ऋषि।

अठारह पुराण =

1-ब्रह्मण पुराण। **2**-पद्म पुराण। **3**-शिव पुराण। **4**-भागवत पुराण **5**- नारद पुराण **6**-मार्कण्डेय पुराण। **7**-अग्नि पुराण। **8**-भविष्य पुराण। **9**-ब्रह्मवैवर्त पुराण। **10**-लिंग पुराण **11**-वराह पुराण। **12**-स्कंद पुराण। **13**-वामन पुराण। **14**- कुरुम पुराण। **15**-गरुड पुराण। **16**-मत्स्य पुराण। **17**-ब्रह्माण्ड पुराण। **18**- विष्णु पुराण।

आठ प्रमुख उपनिषद्,

1 केन उपनिषद् 2-कठ उपनिषद् 3-मुण्डक उपनिषद् 4-तैतरीय उपनिषद् 5-माण्डूक्य उपनिषद् 6-ऐतरीय उपनिषद् 7-प्रश्न उपनिषद् 8- छान्दोग्य उपनिषद्।

छः दर्शन शास्त्र :-1-कणाद का वैशेषिक शास्त्र 2-गौतम का न्याय शास्त्र। 3-पतञ्जलि का योग शास्त्र। 4-कपिल का सांख्यशास्त्र। 5-जैमिणी का मीमांसा शास्त्र। 6-वादरायण का वेदान्त शास्त्र।

चार आश्रम-

1. ब्रह्मचर्य आश्रम **2**. गृहस्थ आश्रम, **3**. वानप्रस्थ आश्रम, **4**. सन्यास आश्रम।

जीवन में चार पदार्थों का लक्ष्य रखा गया है। वे हैं :-

1- धर्मः अपने शास्त्र धर्म पर अडिग रहकर धर्म का पालन करना,

2- अर्थः धर्म पूर्वक धन कमाना तथा खर्च करना,

3. कामः धन को संसार बसाने, दान आदि के कार्यों में धर्मपूर्वक व्यय करना।

4- मोक्षः संसार में रहकर अंत में मोक्ष प्राप्त करने हेतु पहले से प्रयत्न करना।

पश्चिमी देशों में केवल अर्थ कमाने का ही लक्ष्य है, जो वासनाओं की पूर्ति का ही साधन बन जाता है जिस को अर्जित करने हेतु उनकी दृष्टि में कोई भी साधन या विधि अपनायी जा सकती है।

हिंदू जीवन पद्धति

- (क) **चार वर्ण** :(समाज में गुण कर्म की दृष्टि से) **1** ब्राह्मण-शिक्षक **2** क्षत्रीय-रक्षक **3** वैश्य-पोषक **4** शुद्र-सेवक
- (ख) **चार आश्रम**- **1** ब्रह्मचर्य आश्रम- विद्याध्ययन **2** गृहस्थ आश्रम- कुटम्भ सेवा **3** वानप्रस्थ आश्रम- **4** संयास आश्रम- मानव सेवा, चित निरोध
- (ग) **चार पुरुषार्थ-1** धर्म-उपासना **2** अर्थ-द्रव्यार्जन **3** काम-इच्छा पूर्ति **4** मोक्ष्य- ईश्वर प्राप्ति।
- (घ) **चार ऋण**- **1** देवऋण-स्वधर्माचरण **2**: ऋषिऋण-ज्ञानार्जन **3** पितृऋण-वंशसा तत्त्व **4** समाजऋण- समाज सेवा
- (ड) **चार तीर्थ** **1-** अर्थ तीर्थ - व्यापार केन्द, **2-** काम तीर्थ - कलाशास्त्र केन्द्र, **3-** धर्म तीर्थ-सांस्कृतिक केन्द्र, **4-** मोक्ष तीर्थ-आध्यात्म केन्द्र।
- (च) **चार देवताः**- **1-** मात्रदेव। **2-** पितृदेव। **3-** आचार्यदेव।

4- तिथिदेव

- भारत के चार भागों में **चार प्रकार के कर्म काण्ड** प्रचलित हैं।

१- **ऋषि लवौगाक्ष** निर्मित कर्मकाण्ड काशमीर में प्रचलित है।

२- **ऋषि गोबिल** का बनाया कर्मकाण्ड आर्यवर्त (भारत) के मध्य तथा उत्तरी भाग में प्रचलित है।

३- **ऋषि अत्रेय** का बनाया कर्मकाण्ड पूर्व भाग में,

४- **ऋषि पाराशर** का आर्यवर्त के दक्षिण भाग में प्रचलित है।

भारतीय इतिहास एक दृष्टि में:-

यह देश **1100** वर्षों तक परतंत्र रहा है जिससे इसकी संस्कृति का अधिक ह्रास होता गया। बरतानिया ने जब पूरे भारत पर नियंत्रण पा लिया तो लॉर्ड मेकाले ने ब्रिटिश पार्लियामेंट में भारत के बारे में वक्तव्य देते हुए कहा था " मैने संपूर्ण भारत का भ्रमण किया हुआ है तथा मैं ने एक भी मनुष्य को ऐसा नहीं देखा है जो भीख मांगता हो या चोर हो, इतने ऊंचे आदर्श, इतनी मानसिक क्षमता तथा चरित्र बल, ऐसी संपन्नता मैंने इस भारत में देखी है कि मैं नहीं सोचता हम कभी भी इस देश को जीत सकेंगे, जब तक न कि इस देश की रीड की हड्डी जो कि उस की आध्यात्मिक तथा सांस्कृतिक विरासत है को न तोडेंगे। इसलिए मैं सुझाव देता हूं कि हम उस की पुरानी तथा आदिकाल से चली आरही शिक्षा पद्धति, उस की संस्कृति को बदल दें क्योंकि यदि भारतीय लोग यह सोचें कि जो कुछ भी अंग्रेज़ी तथा विदेशी है उनकी स्वदेशी से अच्छी तथा बडी और श्रेष्ठ है तो वह अपना स्वाभिमान खो बैठेंगे तथा वही बनेंगें जैसा हम उन्हें

बनाना चाहेंगे, वास्तविक शासित राष्ट्र" (**Lord Mc Cauley in his speech of Feb. 2, 1835, British Parliament.**)

जम्मू कश्मीर प्रदेश पर एक नज़र।

हिमालय पर्वत श्रशंखला के बीच में सुंदर घाटी 'कश्मीर' एक विश्व विख्यात भूभाग है। इसे भूस्वर्ग कहा जाता है। यह जम्मू कश्मीर प्रदेश या राज्य का एक महत्वपूर्ण सूबा है। जम्मू कश्मीर लद्दाख राज्य को जम्मू कश्मीर राज्य के नाम से ही पुकारा जाता है। संपूर्ण जम्मू कश्मीर प्रदेश का क्षेत्रफल लगभग 222236 वर्ग किलोमीटर है तथा जनसंख्या एक करोड़ से ऊपर है। इसका 78932 वर्ग कि० मी० भाग पाकिस्तान के नियंत्रण में तथा 37555 वर्ग कि० मी० चीन के नियंत्रण में है। यह तीनों भू-भाग हर प्रकार से एक दूसरे से भिन्न हैं। इस की उतरी सीमा चीन तथा पाकस्तान से मिलती है। इस की दक्षिणी सीमा हिमाचल प्रदेश से मिलती है।

जम्मू-

यह वीर भूमि समुद्र तल से 1000 से 2000 फीट की ऊंचाई पर है। यह क्षेत्र कुछ मैदानी है कुछ पहाड़ी। इस के बीच में से चिनाब तथा रावी नदी बहती हैं। चिनाब को चंद्रभागा के नाम से भी पुकारा जाता है। इस के पानी से सलाल तथा डलहस्ती दो बिजली परियोजनाएं चलती हैं। यहां के लोगों को डोगरे कहते हैं। लक्षनपुर से बानिहाल सुरंग तक इस का विस्तार है। पश्चिमी भाग पूरी तरह से पाकस्तानी सीमा तक फैला हुआ है।

जम्मू के दस ज़िले-

जम्मू, राजोरी, पुंछ, रियासी, ऊधमपुर, डोडा, रामबन, किश्तवार,

कठुआ, सांबा।

बसोली के पश्मीना शाल तथा रंबेरसिंहपोरा का बासमती चावल विश्वविख्यात है। यहां शिवखोडी, सरथल देवी, परमंडल, वैष्णव माता प्रसिद्ध तीर्थ हैं। माता वेष्णव देवी का अस्थापन कटडा की पहाडी पर गुफा में स्थित है। हर वर्ष लाखों यात्री देवी के दर्शन हेतु आते हैं। भारत सरकार जम्मू को रेल द्वारा कश्मीर घाटी से मिलाने के प्रयास में लगी है।

लद्दाखः-

तीसरा भाग जम्मू कश्मीर राज्य का लद्दाख है। समुद्र तल से इस की ऊंचाई प्रायः 14000 फीट तक है। सिंधु नदी इस प्रदेश के बीच से गुजरती है। किशनगंगा का ऊपरी भाग भी यहां से गुज़रता है। यहां विश्व का सबसे ऊंचा हवाई अड्डा है। यहां अधिकतर बौद्ध जाति के लोग रहते हैं। कार्गिल में शिया मुसलमान रहते हैं। यह क्षेत्र भी जम्मू की तरह कश्मीर घाटी की तुलना में पिछडा हुआ है।

ज़िलेः-

इसके ज़िले कार्गिल तथा लेह है। यह क्षेत्र अति दुर्गम है। यहां के लोग अन्य प्रभागों की उपज पर निर्भर हैं। यहां अब दूध तथा सब्जियां पैदा होती हैं। लगभग वर्ष भर यहां ठंड रहती है। छः मास तो लद्दाख सड़क द्वारा सारे देश से कटा रहता है। यहां के याक दूध देने तथा माल ढोने के काम आते हैं। ऊपरी इलाकों में केल बकरी पाई जाती है जिस से पश्मीना ऊन प्राप्त होता है। अब यह बकरी संरिक्षत जीव है।

जम्मू शहर से कश्मीर लगभग 316 किलोमीटर की दूरी पर है। जिस

तक सफर शिवालिक पहाडियों के बीच से होकर बानिहाल तक टेडे मेडे दुर्गम रास्ते से होकर होता है। इस सड़क का नाम बानिहाल कार्टरोड है। इस पर नगरोटा, उधमपुर कस्बा, चिनैनी, कुद, पतनीटाप, बटोत, चंद्रर कोट, रामबन, तथा बानिहाल मुख्य छोटी बस्तियां पड़ती हैं। बानिहाल के पास 8000 फीट ऊंचाई पर दोमील लंबी सुरंग को पार करके घाटी में प्रवेश किया जाता है।

कश्मीरः- कश्मीर चारों ओर से श्वेत हिम आच्छादित हिमालय की ऊंची तथा आकर्षक चोटियों से घिरा हुआ है। घाटी की लंबाई लगभग 136 किलोमीटर तथा चौडाई 40 से 50 किलामीटर है। यहां की जन संख्या मुस्लमानों की अधिक है, यहां लगभग आठ प्रतिशत हिंदू लोग रहते थे किंतु पलायन के कारण घाटी में अब चंद हज़ार ही कश्मीरी पंडित रहते हैं। यहां के लोगों की वेषभूषा फिरन है। इस घाटी को ऋषि भूमि के नाम से पुकारा जाता है। सोफी संतों जैसे सोफी संत शमस फकीर (1843-1901 AD), अहदज़रगर(1908-1984 AD),आदि ने भी यहां के ऋषित्व को सींचा है, आजकल ऐसे संत और सोफी गुप्त होकर रहते हैं।

सुंदरताः-कश्मीर की सुंदरता सारे संसार में प्रसिद्ध है। इस की सुंदरता का अनुभव कश्मीर को देखने से ही होता है। शब्दों में इस की सुंदरता का वर्णन नहीं किया जा सकता है। अलबिरूनी के शब्दों में "अगर फिर्दोस बर रोये ज़मीन अस्त, हमीं अस्तो हमीं अस्तो हमीं अस्त।।"अर्थात यदि पृथ्वी पर कहीं स्वर्ग है तो यही घाटी है यही है। इसके अतिरिक्त कश्मीर को ऋषिवा'र अर्थात ऋषिभूमि भी कहा जाता है। इसी लिए कश्मीर ऋषियों तथा संतों का देश है।

रास्तेः-

1- जेलम वेली रोड- यह श्रीनगर से मुज़फराबाद तक का राजमार्ग है। अब ऊडी से आगे यह रास्ता बंद है। यह रास्ता जेहलम के किनारे किनारे जाता है।

2- बानहाल काटरोड-यह मार्ग श्रीनगर से बानिहाल टनल से होते हुए जम्मू तथा लखनपुर तक जाता है।

3- तीसरा मार्ग श्रीनगर से बालतल तथा सोनामर्ग से होते हुए ज़ोझीला दर्रे को पार करते हुए कारगिल के बीच से निकलते हुए लेह तक जाता है। बालतल से श्री अमरनाथ गुफा तक छोटा पर कठिन रास्ता है।

दरिया तथा नदियां-

1- वितस्ता- जो व्यथवो'तुर से आरंभ होती है तथा वेरीनाग चश्मा का पानी भी इसका स्रोत है। वे'थ वो'तुर में हर वर्ष वितस्ता का जो पार्वती माता का रूप है जन्म दिन मनाया जाता है। इस को व्यथ भी कहा जाता है। यह दरिया श्रीनगर के बीच से होकर वुलर झील से होते हुए बरामुला तक सुस्त गति से चलता है। वहां से इसकी गति बढ़ जाती है। खनाबल से बारामुला तक इसमें नावें चलती हैं। यह सारे कश्मीर का पानी सोक लेता है।

2- लेद्दर-यह पहलगांव के रास्ते से होती हुई खनाबल अनंतनाग के पास वितस्ता से आ मिलती है। 3- वेशव-यह कौंसरनाग झील से निकलकर संगम के पास जेलम में आ मिलती है।

छोटी सिंध, दूध गंगा आदि कई नदियां वितस्ता के साथ मिल जाती हैं।

झीलें-

1- डल झील- यह सुंदर झील श्रीनगर के पास है। यह सात किलोमीटर लंबी तथा चार किलोमीटर चौडी है। इस में हाऊस बोट तथा नौकाएं इसकी सुंदरता को बढाती हैं। इस के किनारे पर हारी पर्वत, शंकराचार्य पहाड, चारबाग, जैसे निशात, शालिमार, चश्मा शाही तथा हारवन हैं। झील में तैरती ज़मीन तैयार की जाती है जिस पर सब्ज़िया उगाई जाती हैं। इन खेतों का कभी-कभी स्थान बदला जाता है तथा झील डल के दूसरे भाग में इन्हें लेजाकर रखते हैं।

2- वुलर झील- यह एशया में सबसे बडी मीठे पानी की झील है। यह नाविकों के लिए खतरनाक है। क्योंकि इसमें कभी तूफान भी आसकते हैं। वितस्ता इसके बीचसे होकर जाती है।

3- शिशरम नाग-पहलगाम से श्री अमरनाथ गुफा के मार्ग पर यह झील स्थित है। इस झील में कभी कभी शेषनागजी कई फन वाले नाग के रूप में दर्शन देते हैं।

4- मानसबल झील। श्रीनगर से बीस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है।

5- तारसर मारसर- यह त्राल के नागबेरन के पास दो झीलें हैं। यह श्रीनगर के लिए हारवन जलाश्य का स्रोत है।

तीर्थ- सारा कश्मीर एक तीर्थ स्थल है। तीर्थ स्थलों के लिए यात्रा का शब्द प्रयोग में आता है।

श्री अमरनाथ गुफा तीर्थ यात्रा। इस गुफा में बर्फ का स्वयं निर्मित शिवलिंग बनता है। जो प्रत्येक शुक्ल पक्ष की पहली तिथि से बनना आरंभ होता है और पूर्णमासी

को 10 फीट तक ऊंचा हो कर अमावसी तक पूर्ण रूप से क्षीण हो जाता है। हर वर्ष आषाढ पूर्णिमा तथा श्रावण पूर्णिमा को शिवलिंग के दर्शन होते हैं किंतु श्रावण शुक्ल पुर्णिमा को ही शिव लिंग के दर्शन करने का विधान है। इस यात्रा में हर वर्ष पवित्र शिवलिंग के दर्शन के लिए लाखों श्रद्धालु आते हैं।

श्री चक्रेश्वरी हारी पर्वत श्रीनगर यात्रा। त्रिपुरसुंदरी यात्रा। गंगबल यात्रा। तुलमुल यात्रा, कमला यात्रा। हरमुकट गंगा यात्रा। वे'थ वो'तुर यात्रा। ज्वालादेवी की खिव यात्रा। शिवाभगवती अकिनगाम यात्रा। भैरव यात्रा श्रीनगर। शंकराचार्य श्रीनगर, **शारदा यात्रा। आदि।**

शारदा माता का तीर्थ स्थान श्रीनगर से 130 कि मी की दूरी पर पाक अधिकृत कश्मीर के मुज़फराबाद के ज़िले में स्थित है। 1947 ई० से पूर्व भाद्र शुक्ल अष्टमी को इस तीर्थ स्थल पर एक भव्य मेला लगता था।

पर्यटक स्थल-गुलमर्ग, यूसमर्ग, पहलगांव, अछाबल, कुकरनाग, वेरीनाग, अहरबल, चारों बाग, डल जील, इत्यादि।

दस ज़िले- अनंतनाग, कुलगांव, शुपयान, पुलवामा, श्रीनगर, गांदरबल, बडगांव, बांडीपुर, कुपवारा, बारामुला

पुस्तकें- ज्ञात इतिहास के अधिकतर ग्रंथ पहले शारदा लिपि में लिखे जाते रहे हैं। इनमें से कुछ ग्रंथ जम्मू के रणवीश्वर तथा पूणे के पुस्तकालयों में उपलब्ध हैं।

पठानों के ज़माने में पंडितों को घास के थेलों में बंद करके पानी में डुबो दिया जाता था तथा साथ ही उनकी पुस्तकें भी पानी में बहायी जाती थीं। कुछ पुस्तकें कंठस्थ होने के कारण पंडित केशव भट्ट ने अपनी पूरी धन राशि लगाकर

कश्मीरी पंडितों के लिए कर्मकांड की पुस्तके पुनः लिखकर छपवाई थीं।

पोशाक-

यहां के लोग सामान्यतः फिरन पहनते हैं। चार मास तक अत्याधिक ठंड का प्रकोप रहता है। इस अवधि में लोग कांगडी का भी प्रयोग करते हैं।

कश्मीर वादी के प्रसिद्ध छोटे बडे कस्बे तथा शहर-

श्रीनगर {प्रदेश की ग्रीष्मकालीन राजधानी} ।

दक्षिणी कश्मीर जिसको मराज़ कहते है- शोपयान, त्राल, अनंतनाग, बिजबिहाडा {पुराना नाम विजेश्वर विश्वविद्यालय}, मार्तण्ड, कुलगांव, पुलवामा,

उत्तरी कश्मीर जिसको कमराज़ {कर्मराजाः} कहते हैं उस में सोपोर, पटन, बारामुला {वरामूला}, हंदवारा, कुपवारा, बांडीपुर, ऊडी आदि हैं।

Refrences- 1.Rajtarangini translation by M.A.Stien 2. W. Lawrance
'The Valley of Kashmir'.
3.Shri Rupabhawani Rahasia Updesh by Shree Alakh sahiba Trust Kashmir.
4. 'जीवनी स्वामी गोविंद कौल, लेखक पुष्कर नाथ रैणा'।
5. ह्यज़े वनवुन हियमाल लेखक पुकरनाथ रैणा। 6. ललीश्वरी- श्री जिया लाल कौल।
7. Pride of India. cost Rs 2000.
8. 'घाटी के स्वर'-श्री नरेंद्र सहगल

संजीवनी शारदा केन्द्र

एक संक्षिप्त परिचय

शारदा के वैभवशाली स्वरूप की प्रतिष्ठा बचाये रखने हेतु अपने धर्म समाज एवं राष्ट्र के प्रति अनुराग एवं कर्तव्य भावना को सुदृढ बनाने हेतु 'संजीवनी शारदा केन्द्र की स्थापना शारदाष्टमी (2-9-1995) के दिन जन्मू क्षेत्र के आनन्दनगर (बोडी) में हुई। केन्द्र की स्थापना के पीछे केवल यही संकल्प निहित है कि शारदापीठ (कश्मीर) की गरिमा अद्वितीय रुप से संसार के आकाश में पुनः चमक उठे। इसी संकल्प को साकार करने हेतु तथा अपने गौरवशाली पूर्वज़ों की धरोहर की क्षतिपूर्ति के लिए केन्द्र ने अपनी गतिविधियां चलाने हेतु कुच्छ कार्य–क्षेत्र एवं लक्ष्य स्थापित किये हैं, यथा–

1. शारदा भवन का निर्माण।
2. मुख्य धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक उत्सवों का सामूहिक आयोजन।
3. जनहित अभियान के अन्तर्गत व्यावसायिक प्रशिक्षण केन्द्रों की व्यवस्था।
4. कश्मीर–संस्कृति एवं इतिहास के संदर्भ में शोध कार्य।
5. शारदा लिपि एवं संस्कृत भाषा का पठन–पाठन।
6. एक भव्य पुस्तकालय की स्थापना।
7. प्रकाशन प्रभाग की स्थापना।

अपनी गतिविधियों को सुचारू ढंग से चलाने हेतु आनन्दनगर बोड़ी में खरीदे एक भूमि खण्ड पर शारदाभवन का निर्माण हो चुका है।

युवा वर्ग को स्वावलंबी बनाने के उद्देश्य से योजना बद्ध रूपसे

कार्यक्रम चलाये जा रहे हैं। केन्द्र को एक बहु–आयामी संस्थान के रूप में विकसित करने की योजना है। इसी संदर्भ में केन्द्र द्वारा एक वर्षीय पाठ्यक्रम पर आधारित बिजली, रेडियो एवं टी० वी का प्राथमिक प्रशिक्षण दिया जा चुका है।

केन्द्र के परिसर पर ही युवावर्ग को कम्प्यूटर–प्रशिक्षण दिये जाने हेतु शारदा कम्प्यूटर प्रशिक्षण 'संस्थान' की स्थापना की गई है। यह संस्थान युवक समाज को भिन्न–भिन्न पाठ्यक्रमों के आधार पर प्रशिक्षण दे रहा है।

शोध की दिशा में केन्द्र प्रयासरत है। कश्मीरी पण्डितों की सांस्कृतिक पहचान को सुरक्षित रखने के उद्देश्य से पुरातत्व, इतिहास, धर्म, दर्शन, भाषा, सहित्य, लिपि, लोक–जीवन और लोक–कलाओं से संबंधित अनुसंधान कार्य को प्रोत्साहन देकर विशेष कार्यक्रमों एवं विचार–गोष्ठियों का आयोजन किया जा रहा है।

केन्द्र द्वारा गठित समाज एवं संस्कार समिति की देख–रेख में विशेष धार्मिक संस्कारों को सामूहिक रूप से आयोजित करने के अन्तर्गत कई बार सामूहिक यज्ञोपवीत संस्कार समारोहों का आयोजन हुआ है।

केन्द्र की महोत्सव समिति मुख्य धार्मिक एवं सांस्कृतिक उत्सवों का सामूहिक आयोजन करती है। मुख्यरूप से 'शारदाष्टमी' और 'महशिवरात्रि' महोत्सवों का आयोजन उल्लेखनीय हैं। 'शारदाष्टमी' समारोह के अवसर पर एक महा यज्ञ रचाने के अतिरिक्त समाज के प्रति समर्पित किन्ही 'दो' महानुभावों को 'शारदा–पुरस्कार' से सम्मानित किया जाता है। महाशिवरात्रि के अवसर पर केन्द्र की ओर से एक वार्षिक प्रेरणा चित्र जनता को भेंट किया जाता है।

भारतीय जीवन मूल्यों के प्रचार के लिये उपयोगी साहित्य के प्रकाशन एवं वितरण की व्यवस्था करने हेतु 'प्रकाशन–प्रभाग' का गठन हुआ है। प्रकाशन–प्रभाग द्वारा कश्मीर के महापुरुषों एवं तीथस्थलों पर आधारित कई पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

समय–समय पर केन्द्र द्वारा शारदा लिपि के पठन–पाठन एवं लेखन हेतु कक्षाऐं आयोजित की जाती हैं। इसके अतिरिक्त 'संस्कृत–संभाषण' कक्षाओं की व्यवस्था भी की जाती है।

जनता को धार्मिक, सांस्कृतिक एवं केन्द्र द्वारा प्रकाशित सहित्य सुलभ रखने हेतु एक 'वस्तु–भण्डार की व्यवस्था की गई है।

एक भव्य पुस्तकालय की स्थापना भी केन्द्र का एक लक्ष्य है। कई महत्वपूर्ण पुस्तकें केन्द्र के पुस्तकालय में आज उपलब्ध हैं। और हर वर्ष पुस्तकों मे वृद्धि हो रही है।

इसके अतिरिक्त केन्द्र की मातृ–शक्ति इकाई तथा विद्यार्थी इकाई द्वारा विकास के कार्यक्रम आयोजित होते हैं। इनमें महिला व्यावसयिक केन्द्र एवं युवावर्ग में ज्ञान–प्रतियोगितायें उल्लेखनीय हैं।

शारदाभवन के भव्य कक्ष में एक 'चित्र–शाला' का निर्माण भी एक विशेष उपलब्धि हैं। इस चित्र–शाला में कश्मीरी सन्त–महात्माओं एवं समाज सेवियों के चित्रों का प्रदर्शन है।

शारदा भवन के निर्माण के अन्तर्गत प्रथम तल पर निर्मित भव्य कक्ष कश्मीर के प्रसिद्ध संत कवि श्री कृष्णजू राज़दान के नाम समर्पित है। इसी कक्ष में केन्द्र का पुस्तकालय एवं शोध–संस्थान स्थापित है।

केन्द्र आयकर विभाग के साथ पंजीकृत हैं जिसके अन्तर्गत केन्द्र को धारा 80G की सुविधा भी प्राप्त है।